بسم الله الرحمن الرحيم

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ

अल्लाह पाक ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह सब कुछ सिखा
दिया जो आप नहीं जानते थे

नबी–ए–पाक ﷺ का इल्म–ए–ग़ैब

क़ुरआन व हदीष की रौशनी में

ग़्यासुद्दीन अहमद मिस्बाही

ख़ादिम : मदरसा अरबिया सईद–उल–उलूम

एकमा डिपो, लक्ष्मीपुर–महराजगंज

Mob: 9554255786
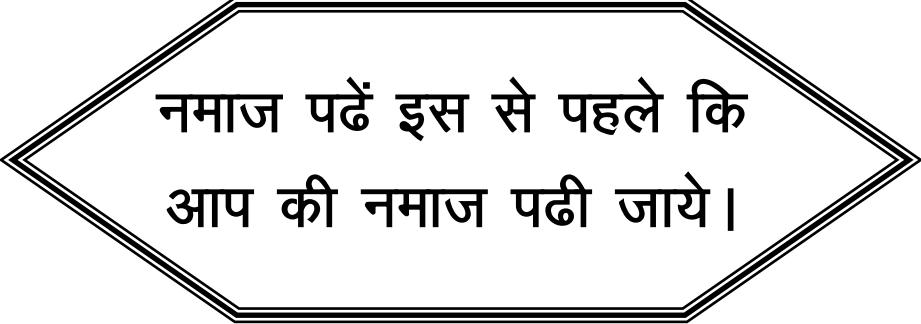
प्रकाशक

सीरत एजूकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट
नौतनवां, महराजगंज

नाम किताब : ***नबी–ए–पाक ﷺ का इल्म–ए–ग़ैब***
कुरआन व हदीष की रौशनी में

लेखक : *मौलाना ग़्यासुद्दीन अहमद मिस्बाही*

प्रूफ रीडिंग : *मौलाना मो0 सदरूददीन मिस्बाही*

पेज : 48

कीमत : रू0: 30

प्रकाशन I : 06.04.2016

प्रकाशक : *सीरत एजूकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट*
नौतनवां, महराजगंज

नोट : किताब छापने की पुरी इजाजत है।

नमाज पढें इस से पहले कि
आप की नमाज पढी जाये।

بسم الله الرحمن الرحيم

अपनी बात

इसमें कोई शक नहीं कि हुज़ूर–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत ही ईमान की जान है। जिसने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़र्रा बराबर भी गुस्ताख़ी की उसका सब अमल बर्बाद है। अल्लामा इक़्बाल ने बड़ी प्यारी बात कही है : **ब मुस्तफ़ा ब रसां कि दीन हमा ऊस्त**–यानि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक खुद को पहुँचा दो क्योंकि वही मुकम्मल दीन हैं।

हम अपने नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत करते हैं और सच्ची मोहब्बत करते हैं इसलिए हम हमेशा उनकी बड़ाई ही बयान करते हैं और इन शा अल्लाह करते रहेगें, मगर कुछ नादान लोग ऐसे हैं जो अपनी तह़रीर और तक़रीर में सिर्फ नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर नक़्स और कमी तलाश करने में लगे रहते हैं। उनके मर्तबे और इल्म में ऐब ढूँढते हैं। **क़ुरआन की खुली आयतों और मशहूर हदीषों का इन्कार करके मक़ाम–ए–मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घटाने की कोशिश करते हैं। मगर उन्हें मालूम नहीं कि जिनका मर्तबा अल्लाह पाक ने बढ़ा दिया उसे कौन कम कर सकता है।**

आपकी खिदमत में इस वक्त जो किताब पेश की जा रही है इसमें नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म–ए–ग़ैब (अदृश्य ज्ञान) के हवाले से गुफ्तगू की गयी है और उसे कुरआन व हदीष और बुजुर्गों के अक़्वाल से साबित किया गया है। इस हवाले से हमारे बुजुर्गों ने भी बहुत कुछ लिखा है। मैंने भी उन्हीं के नक़्श–ए–कदम पर चलते हुए करीम आक़ा ग़ैब दान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलामों में अपना नाम लिखवाने की कोशिश की है। हमें यकीन है कि जिसके दिल के अन्दर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत है उसकी मोहब्बत और बढ़ जायेगी और जिसके दिल में कुछ शुबहा और फुतुर है अगर वह भी ईमान की नज़र से पढ़ने की कोशिश करेगा तो इन शा अल्लाह उसे हक़ समझने की तौफीक नसीब होगी। अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हमें हक़ समझने, हक़ पर अमल करने और चलने की तौफीक अता फरमाये– आमीन!

ग़्यासुद्दीन अहमद मिस्बाही

ख़ादिम : मदरसा अरबिया सईद–उल–उलूम

एकमा डिपो, लक्ष्मीपुर–महराजगंज

नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म–ए–ग़ैब, कुरआन व हदीष की रौशनी में

بسم الله الرحمن الرحيم

इल्म की दो क़िस्मैं हैं–एक वह जो हम मदरसों, कॉलेजों, यूनिवर्सिटियों में हासिल करते हैं, एक इल्म वह है जो बराहे रास्त पढ़ाया जाता है। उसके लिए न तो किसी मदरसे की ज़रूरत है और न ही किसी कॉलेज और यूनिवर्सिटी की। यह एक पोशीदा और छुपा हुआ इल्म है इसी को कुरान–ए–पाक ने इल्म–ए–ग़ैब का नाम दिया है। अल्लाह पाक ने कुरान–ए–पाक की सूरह कहफ़ की आयत नम्बर, 64 मे फ़रमाया है कि इस पर ईमान लाना मुसलमान की निशानी और पहचान है। यह इल्म–ए–ग़ैब हर इल्म से ऊँचा और बुलन्द है। यह खुद हासिल करने से हासिल नहीं होता, यह सिर्फ अल्लाह पाक की अ़ता और फज़्ल से हासिल होता है।

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की तरफ से इल्म–ए–ग़ैब तमाम पैग़म्बरों और रसूलों को अ़ता किया गया लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन सब से ज़्यादा अ़ता किया गया, बल्कि यही आपका सबसे बड़ा मोअजिज़ा था।

अभी आने वाली तहरीर में कुरान–ए–पाक और हदीष शरीफ के हवाले से जो बात पेश की जाएगी, उससे आप को मालूम होगा कि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन ज़ेहात (तरीकों) से इल्म–ए–ग़ैब अ़ता किया गया।

1. बराहे रास्त अल्लाह पाक ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म–ए–ग़ैब अ़ता फरमाया।

2. क़ुरान–ए–करीम के ज़रिया इल्म–ए–ग़ैब अ़ता किया जो ग़ैब का ख़ज़ाना है, जिसकी चंद मिसालें यह हैं।

रूम के फतह पाने की पेशीन गोई

614 ई0 में रूम और फारस के दोनों बादशाहों में एक जंग हुई जिसमें छब्बीस हज़ार यहूदियों ने फारस के लश्कर में शामिल होकर साढ़े चार हज़ार ईसाइयों का कत्ल–ए–आम किया। यहाँ तक कि 616 ई0 मे फारस के बादशाह को फतह मिल गई। ऐसे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि रूम जो टूट कर बिखर चुका है, कभी फारस पर फतह पा सकेगा, लेकिन मुख़्बिर–ए–सादिक़ नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको ग़ैब की ख़बर देते हुए क़ुरान–ए–पाक की यह आयत सुनाई। रूमी हार गए, पास की ज़मीन में लेकिन वह अपनी हार के बाद जल्द ही फतह पा लेंगे। (सूरह अल रूम आयत 2, पारा 21)

चुनांचे ऐसा ही हुआ कि सिर्फ नौ साल बाद अहले रूम फिर फारस पर फतह पा गए। जबकि उस वक़्त दुश्मन, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ग़ैब की ख़बर का मज़ाक़ उड़ा रहे थे कि ऐसा कहाँ हो सकता है?

हिजरत के बाद क़ुरैश की तबाही

जिस वक़्त नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का शरीफ में नुबुव्वत का ऐलान फरमाया तो तमाम मक्का के लोग आपके दुश्मन हो गए, और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया उनका जीना दूभर कर दिया। यहाँ तक कि उनको मुल्क–ए–हबशा और शहर–ए–मदीना की तरफ हिजरत करनी पड़ी। यहाँ तक कि

खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अल्लाह पाक के हुक्म से मदीना शरीफ हिज़रत की। उस वक़्त कुरैश की फ़ौजी ताक़त को देखकर ऐसा नहीं लगता था कि मुसलमान कभी वापस मक्का आ सकेंगे, लेकिन नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी वक़्त अपने इल्म–ए–ग़ैब से यह पेशीन गोई फ़रमाई की : करीब था कि वह आपको सर ज़मीन–ए–मक्का से बे–दखल कर दें, लेकिन वह आपके बाद खुद ही उसमें बहुत कम मुद्दत तक रह पाए। (सूरह बनी इस्राइल आयत नम्बर 76, पारा 15)

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पेशीन गोई हर्फ़ ब हर्फ़ सही साबित हुई और उसके सिर्फ एक साल बाद ही गज़्व–ए–बद्र में बड़े–बड़े कुफ्फार–ए–कुरैश का ख़ातेमा हो गया और मुसलमानो की शौक़त बढ़ गई।

फतह–ए–मक्का की पेशीन गोई

हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रात की तारीकी में मक्का से मदीना हिज़रत किया था। उस वक़्त किसी के वहम व गुमान में भी न था कि एक दिन यही मक्का को फतह फरमा लेंगे, लेकिन अल्लाह पाक ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म–ए–ग़ैब के ज़रिया पहले ही बता दिया कि यह मक्का आपके कब्जे में होगा। कुरान–ए–क़रीम की आयत के ज़रिया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को बताया कि 'जब अल्लाह की मदद और फतह' (फ़तह–ए–मक्का) आ जाए और आप देखें कि लोग जमाअत दर जमाअत इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं तो उस वक़्त अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बयान करें और

उसी से बख़्शिश मांगें, बेशक वह बहुत तौबा क़ुबूल फरमाने वाला है। (सूरह अल नस्र पारा 30)

चुनांचे यह पेशीन गोई भी सच साबित हुई और 8 हिज़री में मक्का फतह हो गया।

जंगे बद्र में फतह की खुश खबरी

जंगे बद्र में अहले इस्लाम की तादाद सिर्फ तीन सौ तेरह थी और कुफ़्फार की तादाद एक हज़ार थी। मुसलमान कमज़ोर और बे सरो व समान थे। दुश्मनों के पास हथियार और हर तरह का जंगी सामान था। ऐसे में मुसलमान यह सोच भी न सकते थे कि उनकी फतह होगी, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको कुरान–ए– पाक की सूरह अल क़मर की आयत नम्बर 44, पारा 27 के ज़रिया ग़ैब की बात बताई कि क्या वह (कुफ़्फार) कहते हैं कि हम सब मिलकर बदला लेंगे? यह लश्कर जल्द ही हार जाएगा और यह पीठ फेर कर भाग जाएंगे।

इसी जंग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़े–बड़े कुफ्फार का नाम ले–लेकर बताया कि कौन कहाँ मरेगा और वह वहीं मारा गया, कोई एक अंगुल (बालिश्त) भी इधर–उधर न हुआ और इस जंग में मोमिनों को फतह हासिल हुई।

यह सिर्फ चन्द मिसालें हैं वरना कुरान–ए–क़रीम में ऐसी बहुत सी ग़ैब की आयतें मौजूद हैं, नमूने के लिए इतना ही काफी है।

3. इल्म–ए–ग़ैब की तीसरी ज़ेहत (तरीका) यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह पाक ने शाहिद यानी ग़वाह बनाकर भेजा और ग़वा हके लिए देखना और

मुशहदा करना ज़रूरी है, गवाही वह दे सकता है जो वाक़ेआ के वक़्त मौजूद हो और उसे हर बात का मुकम्मल यक़ीन भी हो। अल्लाह पाक ने सूरह नहल की आयत नम्बर 89 में फ़रमाया और जिस दिन हम हर उम्मत से एक–एक गवाह जो उन्हीं में से होगा, उनके मुक़ाबले में क़ायम करेंगे और उन लोगों के मुक़ाबले में आप को गवाह बना कर लाएंगे।

सूरह फतह की आयत नम्बर 8 में अल्लाह पाक ने फरमायाः

हमने आप को गवाही देने वाला और (ज़न्नत की) खुशखबरी देने वाला और (जहन्नम से) डर सुनाने वाला बना कर भेजा .... मालूम हुआ कि आप सिर्फ अपनी उम्मत ही नहीं बल्कि पिछली तमाम उम्मतों के बारे में जानते हैं। तभी तो क़यामत के दिन आपको गवाह बनाया जाएगा।

कुरान–ए–पाक की वह आयतैं जिन में इल्म–ए–ग़ैब को अल्लाह पाक का ज़ाती इल्म बताया गया है

इल्म–ए–ग़ैब (अनदेखी ज्ञान) के सिलसिले में कुरान–ए–पाक की कुछ आयतों से बाज़ नादानों को यह शुबहा होता है कि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म नहीं है। दर असल जिनके दिल में नबी–ए–पाक की सच्ची मोहब्बत नहीं है उनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फज़ीलत की कोई बात नज़र नहीं आती, वह सिर्फ ऐसी बातें खोजते हैं जिनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत को कम किया जा सके और उनको एक आम आदमी की हैसियत से पेश किया जा सके

तालि मुसलमानों के दिल से उनकी मोहब्बत कम हो जाए। यह लोग इस्लाम के दुश्मनों के हाथों इस तरह बिक चुके हैं कि इनको सही व गलत का फर्क़ भी समझ में नहीं आता। यहाँ तक कि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ाम और मर्तबा कम करने के लिए यह लोग कुरान–ए–पाक की आयतें भी झुठला देते हैं। अपने मकसद वाली आयत तो ब्यान करते हैं लेकिन जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बुलन्द मर्तबा साबित हो, उसे छुपा लेते हैं। जिन आयतों में अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने इल्म–ए–ग़ैब को अपने लिए ख़ास किया है और इसे अपना ज़ाती इल्म बताया है वह यह हैं–

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ

(सूरा अलआम आयत 59)

तर्जमा : उसके पास ग़ैब के ख़ज़ाने हैं जिन्हें उसके अलावा कोई नहीं जानता।

इसी तरह एक दूसरी आयत में कहा गया है–

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

(सूरहः अल,नहल आयत, 77)

तर्जमा : और अल्लाह के लिए है आसमानों और ज़मीनों के ग़ैब।

कुरआन में एक दूसरी जगह पर अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

(सूरहः अल, नमल आयत, 65)

तर्जमा : कह दीजिए कि आसमानों व ज़मीनों में ग़ैब का जानने वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं है।

इन आयतों से बद अकीदा ज़माअ़त के लोग यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि इल्म–ए–ग़ैब सिर्फ अल्लाह पाक को है। बाक़ी और किसी को ग़ैब का इल्म नहीं हो सकता, मगर इन आयतों को ज़रा गौर से देखें तो आप को मालूम होगा कि इनमें अल्लाह रब्बुल ने यह तो फरमाया है कि इल्म–ए–ग़ैब का मालिक मैं हूँ, या मैं जानता हूँ, मगर किसी को ग़ैब का इल्म देने का इनकार नहीं है, जिसका ब्यान खुद अल्लाह पाक ने ही दूसरी आयतों में कर दिया है। जैसा कि हम अभी ब्यान करेंगे, तो मालूम हुआ कि इन आयतों का मतलब यह है कि **'ग़ैब का इल्म हक़ीक़त में तो अल्लाह पाक को ही है, लेकिन उसके बताने से उसके ख़ास बन्दों को भी ग़ैब का इल्म होता है।'** जैसा कि खुद अल्लाह पाक ने कुरान–ए–पाक में इस को ब्यान फ़रमा दिया ताकि किसी को कोई शक–शुबहा की गुंजाइश ना रह जाए।

कुरान–ए–मजीद से नबी के इल्म–ए–ग़ैब का सुबूत

अब कुरान–ए–पाक की वह आयतें पेश की जाती हैं जिनसे साबित होता है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह पाक ने ग़ैब का इल्म दिया है। जैसा कि (सूरह अल जिन्न की आयत 26/27) में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़रमान है–

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ، اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

तर्जमा : वह ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब पर किसी को जानकारी नहीं देता है मगर जिस रसूल को पसन्द कर ले।

तफसीर इब्न–ए–कसीर में इस आयत के बारे में ये कहा गया है कि :

यह आयत अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के इस फ़रमान की तरह हैं जिसमें कहा गया है : ''और वह नहीं पाते उसके इल्म से मगर जितना वह चाहे'' इसी तरह अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने फरमाया कि ''वही हर छुपी और ज़ाहिर चीज़ को जानता है और कोई उसके इल्म पर बा ख़बर नहीं हो सकता, मगर अल्लाह जिसको उस पर बा ख़बर फरमाए'' यही बात इस आयत में भी कही गई है–

तफ़सीर–ए–तबरी में भी इस आयत की तशरीह इसी तरह की गई है।

इसी तरह सूरह आल–ए–इमरान की आयत नम्बर,179 में कहा गया कि :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

तर्जमा : और अल्लाह की शान यह नहीं कि वह तुम आम लोगों को ग़ैब का इल्म बताए बल्कि वह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है। (ग़ैब पर बा ख़र करता है)

दोस्तों! इन दोनों आयतों और ऊपर ब्यान की गई आयतों को एक साथ रख कर देखने से हमको पता चलता है कि हर तरह का इल्म–ए–ग़ैब अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के साथ ख़ास हैं लेकिन अल्लाह पाक जिसको चाहे उसको यह इल्म–ए–ग़ैब अ़ता फ़रमाता है और चूँकि पैग़म्बर–ए–इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम इन्सानों, ज़िन्नातों और फ़रिश्तों के रसूल है, यहाँ तक कि आप अलैहिस्सलातु वतस्लीम सभी नबियों और रसूलों के भी नबी हैं और सबसे अफज़ल व आला हैं, तो उनका इल्म भी सबसे ज़्यादा और अफज़ल व आला होगा, और यह बात हम अपनी तरफ से नहीं

कहते बल्कि खुद अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने कुरान–ए–पाक में जगह–जगह इस को ब्यान फ़रमाया है। सूरह अल निसा की आयत नम्बर 113 में अल्लाह पाक ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया–

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا

तर्जमा : और अल्लाह पाक ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह सब कुछ सिखा दिया जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज्ल है।

इस आयत से मालूम हुआ कि इल्म–ए–ग़ैब भी अल्लाह पाक ने आपको बता दिया, बल्कि तमाम उलूम आपको सिखा दिया। तभी तो फ़रमाया कि आप पर अल्लाह का बड़ा फज़्ल है। अब रही यह बात कि अल्लाह पाक ने नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया कि आप कुछ न जानते थे। हमने आपक को बताया तो यह उसको ज़ेब देता है। उस पाक परवरदिग़ार की शान के लाएक़ है। जैसे एक उस्ताज़ अपने शागिर्द से कहे कि तुम कुछ न जानते थे, मैंने तुम्हें सिखाया–पढ़ाया, तो उस्ताज़ यह कहने का हक़ रखता है, लेकिन कोई दूसरा यह बात कहे तो ज़रूर उसको बुरा लगेगा। इसी तरह अल्लाह रब्बुल इज्ज़त सबसे बे नेयाज़ है। उसी ने सबको इल्म और तमाम चीज़ें अ़ता की हैं। वह अपने पैग़म्बरों और रसूलों से जैसे चाहे कलाम फ़रमाए, लेकिन अगर हम यह बात कहें कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुछ इल्म नही ंतो यह यक़ीनन गुस्ताख़ी और कुफ्ऱ है।

कुरान–ए–करीम की सूरह अल नहल की आयत नम्बर, 89

में फरमाया गया कि :

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

तर्जमा : हमने आप पर किताब उतारी जिसमें हर चीज़ का ब्यान है।

इसी तरह कुरान–ए–करीम के सूरह अल अन,आम की आयत नम्बर, 38 में कहा गया है :

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ

तर्जमा : हमने किताब यानी कुरान में कोई चीज़ उठा ना रख्खी (हर चीज़ का ब्यान कर दिया) और कुरान–ए–करीम की सूरह अल अन,आम की आयत नम्बर, 59 में अल्लाह पाक ने फरमाया –

وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ

तर्जमा : ज़मीन की अन्धेरियों में जो भी दाना (बीज) है और हर खुश्क व तर का ब्यान इस किताब–ए–मोबीन (कुरान) में मौजूद है।

इल्म–ए–ग़ैब भी एक शै (चीज़) है जो यक़ीनन कुरान में मौजूद है और यह बात भी मुसल्लम है कि हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरान–ए–पाक के हर हर लफ्ज़ यहाँ तक कि हुरूफ–ए–मुक़त्तेयात का मतलब भी मालूम है (यह वह हुरूफ़ हैं जिनका मतलब अल्लाह वो रसूल ही जानते हैं, जैसे– कुरान की कुछ सूरतों के शुरू में कुछ हुरूफ़ आए हैं जैसे– अलिफ़ लाम मीम या अलिफ़ लाम रा साद वगैरह, तो इनका मतलब किसी ने ब्यान नहीं किया जिसमें अल्लाह की मसलेहत और हिक़मत पोशीदा है, मगर इनका मतलब भी रसूल–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बताने से जानते हैं, मगर हमें नहीं बताया गया

क्योंकि उसमें अल्लाह पाक की कोई हिकमत छुपी हुई है) और इस पर सबका ईमान है कि कुरान में हर चीज़ का ब्यान मौजूद है और कुरान के हर हर हर्फ़ पर ईमान रखना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है और यह भी बात मालूम है कि हमारे नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान का एक–एक हर्फ़ समझा है। तो अब आप ही फ़ैसला करें कि जब कुरान में हर चीज़ का ब्यान है और इल्म–ए–ग़ैब भी एक चीज़ है, तो यह कैसे हो सकता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म ना हो। नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म है और यक़ीनन है।

इसको हम अपनी तरफ से नहीं कहते बल्कि ख़ुद अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने कुरान–ए–पाक में इसको बता दिया है ताकि बाद में अगर कोई इस का इनकार करे तो जान लो उसके दिल से ईमान निकल चुका है। वह सिर्फ नाम का मुसलमान है, जैसा कि अल्लाह पाक ने कुरान–ए–पक के सूरह अल,हूद की आयत नम्बर, 49 में फरमा दिया है :

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ

***तर्जमा :* यह ग़ैब की ख़बरें हैं जिन्हें हम आपको बताते हैं ।**

इसी तरह कुरान–ए–पाक की सूरह–अल–तक्वीर की आयत नं0, 23 में अल्लाह पाक ने अपने नबी के बारे में फरमाया :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ

***तर्जमा* :** और वह ग़ैब बताने में बख़ील नहीं है।

और यह जुमला उसी वक़्त कहा जा सकता है जब आपको ग़ैब का इल्म हो, वरना अगर किसी के पास माल न हो और उसको कहा जाए कि वह बहुत खर्च करता है, तो इसका क्या मतलब होगा? मालूम हुआ कि अल्लाह पाक ने नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत ज़्यादा ग़ैब का इल्म अ़ता फरमाया। इतना कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। तभी तो फ़रमाता है कि लबह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ैब बताने में बखील नहीं और अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का फ़रमान गलत नहीं हो सकता।

लेकिन अल्लाह की बात तो वही मानेगा जो सच्चा मुसलमान हो वरना नाम मुसलमान तो बहुत हैं। अल्लाह पाक ने मुत्तक़ियों और परहेजग़ारों की सिफ़त (निशानी) ब्यान करते हुए सूरह– अल–बक़रह आयत नं0, 3 में फ़रमाया

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

तर्जमा : मूत्तकी (परहेज़ग़ार) वह हैं जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं, नमाज़ कायेम करते हैं और हमारी दी हुई रिज़्क से ज़कात अदा करते हैं।

अब आप इस आयत में गौर करके बताइए कि जब मुत्तक़ी (परहेज़गार) के लिए ग़ैब पर ईमान रखना ज़रूरी है और मुत्तक़ी की सिफ़त (निशानी) है कि वह ग़ैब पर ईमान रखता है, तो अब यह बताएँ कि उसे ग़ैब की ख़बर कहाँ से मिलेगी। अब आपको कहना पड़ेगा कि अल्लाह पाक ने अपने नबियों को ग़ैब का इल्म बताया और उसके नबियों और रसूलों ने अपनी उम्मत को उस ग़ैब में से कुछ की खबर दी, जैसे– जन्नत, दोज़ख, हश्र, नश्र, हिसाब व

किताब वगैरह इल्म–ए–ग़ैब हैं, जिनकी ख़बर अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने अपने नबियों को अ़ता फरमाई और उन्होंने हमें बताया और बहुत से ग़ैब वह हैं जिनको हमें नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नहीं बताया। अब जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ग़ैब नहीं मानते वह इन ग़ैबों पर कैसे ईमान रखेंगे और उनको मोमिन और मुत्तक़ी कैसे कहा जा सकता है?

हदीष–ए–पाक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म–ए–ग़ैब का सुबूत

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा इल्म अ़ता फ़रमाया। यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म–ए–मा–काना व मा–यकून (जो कुछ हो चुका और जो कुछ होने वालाा है) का इल्म अ़ता फ़रमाया। यही वजह है नबी–ए–करीम अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम जब सहाब–ए–किराम से कोई बात पूछते तो सहाब–ए–किराम कहते अल्लाहु व रसूलुहु अ़,अ़लमु यानि अल्लाह व रसूल ही सबसे ज़्यादा जानते हैं, सहाब–ए–किराम का यह कौल बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, तिरमिज़ी शरीफ, मिश्कात शरीफ और दूसरी हदीष की किताबों में मौजूद है।

जिससे यह पता चलता है कि सहाब–ए–किराम, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त और रसूल–ए–करीम अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम दोनो को अ–अलम (बहुत ज़्यादा इल्म वाला समझते थे, वह नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म में ज़्यादती का अक़ीदा रखते थे। वह आप अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम को अल्लाह जल्ला शानुहू

के इल्म का अमीन समझते थे, जैसा कि हज़रत इब्न–ए–अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हु फरमाते हैं–

1. अल्लाह पाक ने अपने इल्म के लिए अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चुन लिया। (हिल्यतुल औलिया, जिल्द 1, पेज 375)
2. बुखारी शरीफ की जिल्द 1, पेज 453 और मिश्कात शरीफ के पेज 506 में हज़रते उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि – नबी–ए–करीम अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम ने हमारे दरम्यान एक जगह खड़े होकर हमको मखलूक की शुरुआत से लेकर जन्नतियों के जन्नत में जाने और जहन्नमियों के जहन्नम में दाखिल होने तक सब कुछ बता दिया, जिसने उसे याद रखा तो याद रखा, जो भूल गया सो वह भूल गया।

सुबहानल्लाह! यह है नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म–ए–ग़ैब, कि आपने शुरू से लेकर आखिर तक सब कुछ बता दिया और तमाम सहाब–ए–किराम ने इसको दिल से माना भी। किसी ने इस पर ना कोई श़क किया ना इनकार किया, और बता दिया कि हमारा भी यही अकीदा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुरू से आखिर तक सब कुछ जानते हैं क्योंकि उनको मालूम था कि अल्लाह पाक ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म अ़ता फ़रमाया है।

3. बुखारी शरीफ की दूसरी जिल्द, पेज 1046 में हज़रत अबू हुर्रेरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है– नबी–ए–करीम अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम ने इरशाद फ़रमाया। मेरी

उम्मत की हिलाकत कुरैश के चन्द लड़कों के हाथ होगी। इस पर मरवान कहने लगा, उन लड़कों पर खुदा की लानत हो। आप अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम ने फ़रमाया कि अगर मैं चाहूँ तो तुमको बता दूँ कि वह फुलां फुलां हैं।

सुबहानअल्लाह, यह इल्म–ए–ग़ैब नही ंतो और क्या है?

4. बुखारी शरीफ की दूसरी जिल्द के पेज,1083 पर और सही इब्ने हिब्बान की पहली जिल्द के हदीष नम्बर, 509 में हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि – रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़–ए–ज़ुहर के बाद हमें क़ेयामत तक होने वाले बड़े–बड़े हादेसात और वाक़ेयात की ख़बर दी। फिर फ़रमाया – तु मुझ से जो चाहो पूछ लो, अल्लाह की क़सम मैं जब तक अपने इस मक़ाम पर हूँ, जो सवाल करोगे, उसकी खबर दूंगा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह सुनकर लोग रोने लगे और आप फ़रमाते रहे कि जो चाहो पूछ लो। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स खड़ा हुआ। उसने पूछा कि मेरा ठिकाना क्या है? तो आपने फ़रमाया – जहन्नम! उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ए–हुजाफा रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और कहा कि मेरे वालिद कौन हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – तुम्हारे बाप हुज़ाफा ही हैं। इसके बाद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते रहे– पूछो जो पूछना हो, तो हज़रत उमर रजियल्लाहू अन्हु आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने दोनो ज़ानु (क़दम) बिछाकर बैठ गए और अर्ज़ किया—ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम अल्लाह पाक के रब होने और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने पर राज़ी हैं।

5. हज़रत अबू सईद खुदरी रजियल्लाहू अन्हु से इब्ने माजा शरीफ के पेज 288 और मुसनद इमाम अहमद और तिरमिज़ी शरीफ की दूसरी जिल्द, पेज 42, मिश्कात शरीफ पेज 437, अब्वाबुल फितन में रिवायत है कि रसूल—ए—पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़े असर के बाद खुतबा दिया तो आप ने क़ेयामत तक होने वाली हर चीज़ का ज़िक्र फ़रमाया।

6. मुस्लिम शरीफ जिल्द, 2 के पेज, 390/मिश्कात शरीफ, पेज 543/मुसनदे अहमद, 5/341 में हज़रत अबू ज़ैद उमर इब्ने अखतब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का ब्यान है कि रसूल—ए—अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें नमाज़—ए—फज्र पढ़ाई और मिम्बर पर जलवा अफरोज़ होकर नमाज़—ए—ज़ुहर तक खुतबा दिया, फिर नमाज़—ए—असर के बाद दिन डूबने तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुतबा दिया, तो इस दरमयान आपने हमें अब तक जो कुछ हो चुका और जो कुछ क़ेयामत तक होने वाला है, सब बता दिया।

7. बुखारी शरीफ जिल्द 2, पेज 977/व मुस्लिम शरीफ़ जिल्द 2/390 और मिश्कात शरीफ़ किताबुल फितन के

पहले बाब ....मुसनदे अहमद इब्न–ए–हंबल, 5/385 अबू दाऊद शरीफ जिल्द 2/226 में हज़रत अबू हुजैफा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें क़ेयामत तक होने वाली तमाम चीज़ों को ब्यान फरमा दिया और किसी चीज़ को न छोड़ा। मिश्कात शरीफ़ में इतना और है– उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे क़ेयामत तक होने वाली तमाम चीज़ों की ख़बर दी।

8. हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रजियल्लाहू अन्हु से मुसनदे अहमद, 5/153 और अल मजमउल कबीर, 2/1647 में रिवायत है कि – नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने वेसाल से पहले क़ेयामत तक होने वाले तमाम वाक़ेआत की ख़बर दे दी। यहाँ तक कि क़ेयामत तक हर, पर मारने वाले परिंदे के बारे में हमसे इल्म का ज़िक्र किया।

9. तिरमिज़ी शरीफ 2/36 और मिश्कात शरीफ के पेज 21/22 पर हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ए–उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि– नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये, आपके हाथ में दो किताबें थीं। आपने फ़रमाया क्या तुम जानते हो, यह किताबें कैसी हैं? हमने अर्ज़ किया, नहीं। आपने फ़रमाया यह दायें हाथ वाली किताब, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की तरफ से आई है। इसमें तमाम जन्नतियों के नाम और उनके बाप–दादा और ख़ानदान का नाम लिखा गया है और

आख़िर में सबका टोटल भी है। इसमें ना कमी होगी, ना ज़्यादती, और यह बाएँ हाथ वाली किताब, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की तरफ से आई है। इसमें तमाम जहन्नमियों के नाम और उनके बाप–दादा और ख़ानदान का नाम लिखा गया है, और आख़िर में सबका टोटल भी मौजूद है, इसमें भी कमी–बेशी नहीं होगी।

10. हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारगाह–ए–रिसलात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैक वसल्लम! अल्लाह पाक ने आपको हर ग़ैब का अमानतदार बना दिया है, (हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कुरानी अक़ीदा सुनकर) हुज़ूर–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सवाद बिन क़ारिब रज़ियल्लाहु अन्हु से इरशाद फ़रमाया– ऐ सवाद! तुम कामियाब हो गए, (यह रिवायत अल खसाइसुल कुबरा 1/255, उमदतुल क़ारी 17/8, अल इसाबह 2/124, मजमउज्ज़वाइद 8/253, सीरते हलबिया 1/200, ज़रकानी शरहे मवाहिब 7/230, अलबिदाया वन्निहायह 2/407 पर मौजूद है)।

11. मुस्लिम शरीफ की ज़िल्द 2, पेज 102/अबू दाऊद शरीफ 2/8, मिश्कात शरीफ पेज 543/542 पर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत है कि गज़्व–ए–बद्र में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले ही फरमा दिया कि यह फुलां काफिर

के मरने की जगह है और आपने ज़मीन पर हाथ रखकर निशान लगाकर बताया कि यहाँ फुलां काफिर मरेगा और यहाँ फुलां। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वह काफिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लगाए हुए हाथ के निशान से आगे–पीछे ना हुआ (आपने जिस काफिर के मरने का जहाँ निशान लगाया था, वहीं मरा)।

बिल्कुल यही बात हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अनहु से भी रिवायत है।

12. दरबार–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाएर हज़रत हस्सान इब्ने साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक शेर में अपना अकीदा यूँ ज़ाहिर फ़रमाया है–

अगर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई ग़ैब की बात फ़रमा दें तो उसकी तस्दीक उसी दिन या अगले रोज़ दोपहर के वक़्त हो जाएगी। (मुस्तदरक 3/108, अल मजमउल कबीर 4/50/51, दलाइलुन नुबूवह पेज 282/287)।

13. अबू नोएम हिलियतुल औलिया 6/101, कन्जुल उम्मान 11/378/420 में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि अल्लाह पाक के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया– बेशक अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने मेरे सामने दुनिया को रख दिया है और मैं उसे और जो कुछ उसमें क़ेयामत तक होने वाला है, सब कुछ ऐसे देख रहा हूँ जैसे अपनी हथेली को देख रहा हूँ।

14. तिरमिज़ी शरीफ किताबुल तफसीर, पेज 155 और दूसरी हदीष की किताबों में तक़रीबन 10 सहाब–ए–किराम से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि : मैंने अल्लाह रब्बुल इज्ज़त को देखा। उसने अपना दस्त–ए–क़ुदरत मेरी पुश्त (पीठ) मोबारक पर रखा तो मैंने उसकी ठंडक अपने सीने में महसूस की। उस वक़्त मुझ पर हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने सब कुछ पहचान लिया।

    सुबहान अल्लाह! जिस हस्ती ने अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का दीदार कर लिया, उसकी निगाहों से कौन सी चीज़ छुपी रह सकती है। इसीलिए तो मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमह फ़रमाते हैं :

    और कोई ग़ैब क्या तुमसे नेहां (पोशीदा) हो भला
    जब ना खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद।

15. बुखारी शरीफ, के बाब–उल–जिहाद वल सैर में है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि : मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियाँ लाई गईं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान कसीर मुहद्देसीन ने नक़्ल किया है।

16. बुखारी शरीफ, दूसरी जिल्द के पेज 155/956 की बड़ी मशहूर हदीष–ए–पाक है। हज़रत अबू हुरैर। रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई इबादत के लाएक़ नहीं, भूख की वजह से मैं अपना पेट ज़मीन पर रखता और भूख की वजह से मैं पेट पर

पत्थर बाँधा करता था। एक दिन मैं रास्ते में बैठ गया, जिससे लोग बाहर जाते थे, हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास से गुज़रे तो आपने मुझे देख कर मुस्कुरा दिया। आपने मेरे चेहरे को देखकर मेरी हालत को समझ लिया और फ़रमाया अबू हुरैरह मेरे साथ चलो। मैं आप के साथ चल पड़ा कि आप अपने घर में दाख़िल हुए और मुझे भी दाख़िल होने की इज़ाज़त अ़ता फ़रमाई। आपने एक प्याले में दूध देखा तो घर वालों से पूछा कि यह दूध कहाँ से आया है। घर वालों ने कहा कि हदिया (तोहफा) है। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरह, जाओ असहाब–ए–सुफ्सा को बुला लाआ। अबू हुरैर कहते हैं कि मैं दिल में सोचने लगा कि एक प्याला दूध! यह तो मेरे लिए भी नाकाफी है, उस पर असहाब–ए– सुफ्सा को बुलाया जा रहा है, (असहाब–ए–सुफ्सा की तादाद 70 थी जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में रहते थे), लेकिन अल्लाह पाक और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बगैर कोई चारा ना था। इसलिए मैं हुक़्म–ए–मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल करते हुए उन्हें बुला लाया। अब हुज़ूर–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह! प्याला पकड़ो और सबको पिलाओ। मैंने सबको पिलाया और एक ही प्याले में सबने खूब पेट भर कर पी लिया। अब हुज़ूर–ए–पाक

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया और फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरह! अब तु और मैं बाकी रह गए, मैंने कहा लब्बैक या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाया, बैठो और पियो। मैं बैठ गया और पीने लगा, फिर आक़ा बराबर फ़रमाते रहे : अबू हुरैरह और पियो। आख़िरकार मैंने अर्ज़ किया– उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा, अब बिल्कुल गुंजाइश नहीं है, फ़रमाया अब प्याला मुझे दो और आपने आखिर में दूध नौश फ़रमाया (तब जाकर प्याले का दूध ख़त्म हुआ)। आप देखें हज़रत अबू हुरैरह, रज़ियल्लाहु अन्हु का कितना साफ़ अक़ीदा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिलों के राज़ भी जानते हैं।

इसी वाकए को अला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहम ने अपने एक शेर में यूँ ब्यान किया है–

क्यों ज़नाबे बू हुरैरह कैसा था वह ज़ामे शीर
जिससे सत्तर साहेबों का दूध से मुँह फिर गया।

17. मुस्लिम शरीफ जिल्द 1/180/मुसनद अहमद बिन ह़म्बल 3/125 पर यह हदीष–ए–पाक है नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिस तरह मैं आगे देखता हूँ, उसी तरह पीछे भी देखता हूँ।

हज़रत अबू ज़र ग़ेफारी रजि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि : आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मैं वह सब कुछ देखता हूँ जो तुम नहीं देख सकते। (तिरमिज़ी शरीफ 4/556/अल मुस्तदरक 2/510 /तबरानी 9/59)

हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया बेशक अलाह पाक ने मेरे लिए दुनियां उठाकर मेरे सामने कर दी तो मैं दुनियां में जो हो रहा है और जो क़्यामत तक होने वाला है उसे देख रहा हूँ–यह हदीष–ए–पाक अल खसाइस अल कुबरा 2/185 अल मवाहिब 7/204 मजमउल ज़्वाइद 8/287 पर मौजूद है।

18. बुख़ारी शरीफ की पहली जिल्द के पेज 512 पर यह हदीष–ए–पाक है। नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मर्ज–ए–वफात में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाया और उनके कान में कोई बात फ़रमाई तो वह रोने लगीं। फिर थोड़ी देर बाद उनके कान में कुछ फ़रमाया तो वह हँसने लगीं। हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह देखा तो उनको बड़ा तअज्जुब हुआ और रोने, फिर हँसने की वजह पूछने लगीं तो हज़रत फातिमा रजियल्लाहू अन्हा ने कहा कि मैं नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का राज़ नहीं बता सकती। जब अललाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब से मुलाक़ात फ़रमा ली तो फिर हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रजियल्लाहू अन्हा ने हज़रत फ़ातिमा रजियल्लाहू अन्हा से इसका मतलब पूछा तो उस वक़्त आपने बताया कि पहली मर्तबा नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं इसी बीमारी में अपने रब से मुलाक़ात कर लूंगा। यह सुनकर मैं रोने लगी। दोबारा आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि मेरे घर वालों में तु मुझसे सबसे पहले मुलाक़ात करोगी, तो यह सुनकर मैं हँसने लगी (कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मेरी जुदाई का ज़माना सबसे कम है) और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह बात बिल्कुल सच हुई। आख़िर यह इल्म–ए–ग़ैब नही ंतो और क्या है?

19. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल की जिल्द 5, पेज 35 पर यह हदीष–ए–पाक मौजूद है कि हज्ज़तुल वेदा से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रजियल्लाहू अन्हु को यमन का हाकिम बनाकर भेजा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रुख्सत करते वक़्त फ़रमाया कि ऐ मुआज़! अब इसके बाद तुम मुझसे ना मिल सकोगे। जब तुम वापस आओगे तो मेरी क़ब्र और मेरी मस्ज़िद के पास से गुज़रोगे।

20. सुनन–ए–इब्ने माजा शरीफ, किताबुल मनासिक की जिल्द 4, पेज 223, /सुनन–ए–कुबरा बैहक़ी जिल्द 5, पेज 124 पर यह हदीष–ए–पाक है कि हज्जतुल वेदा के मौके पर मैदाने अरफात में तक़रीबन एक लाख पचीस हज़ार से ज़्यादा सहाब–ए–किराम के सामने खुतबा इरशाद फ़रमाते हुए नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि शायद आइन्दा साल तुम लोग मुझसे मुलाकात ना कर पाओगे।

21. इसी तरह बुखारी शरीफ की जिल्द 1, पेज 516 पर यह हदीष–ए–पाक हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु

से रिवायत है कि अल्लाह पाक के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह पाक ने अपने एक बन्दे को इख़्तेयार दिया कि वह चाहे तो दुनिया की ज़िन्दगी पसंद कर ले, चाहे तो आख़िरत को पसंद कर ले, तो उस बन्दे ने आख़िरत को पसंद कर लिया। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोगों को बड़ा तअ़ज्जुब हुआ कि जब आक़ा–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बन्दे की ख़बर दी है तो इसमें रोने की क्या वजह है, लेकिन जब उसके कुछ ही दिनों बाद नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया तो हमने समझ लिया कि नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस बन्दे के इख़्तेयार की बात की थी वह खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और यह कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हम सहाब–ए–किराम में सबसे ज़्यादा इल्म रखने वाले हैं।

सुबहानल्लाह! इस हदीष–ए–पाक से जहाँ यह मालूम होता है, नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इल्म–ए–ग़ैब रखते हैं वहीं यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह पाक ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार बनाया है। यहाँ तक कि

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने दुनिया और आख़िरत दोनो में इख़्तेयार अ़ता फ़रमाया है।

22. बुख़ारी शरीफ की जिल्द 1, पेज 519 पर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है नबी–ए– करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मर्तबा उहुद पहाड़ पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) के साथ तशरीफ़ ले गए तो उस वक़्त पहाड़ हिलने लगा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ उहुद पहाड़ ठहर जा और यक़ीन रख कि तेरे ऊपर एक नबी और एक सिद्दीक़ हैं और दो शहीद मौजूद हैं।

सुबहानल्लाह! नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सिद्दीक़ को तो उस वक़्त सब जानते थे, लेकिन शहीद (हज़रत उमर और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को तो सिर्फ नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही अपने इल्म–ए–ग़ैब से मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे और ईमान मज़बूत करने वाली बात यह है कि इनमें से किसी ने इस पर कोई सवाल भी नहीं किया कि ऐ मेरे प्यारे सरकार आप ऐसा क्यों फ़रमा रहे हैं? क्योंकि उनका अक़ीदा था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इल्म–ए–ग़ैब रखते हैं और वह जो फ़रमा दें वह हो कर रहता है।

23. मुस्लिम शरीफ की जिल्द 2, पेज 394 पर हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का ब्यान है कि हज़रत

अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु खन्दक (गड्ढा) खोद रहे थे। उस वक़्त रसूल–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सर पर प्यार से हाथ फेरा और फ़रमाया, अफ़सोस! तुझे एक गिरोह शहीद कर देगा।

नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पेशीन गोई भी हर्फ़ ब हर्फ़ साबित हुई और हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को जंग–ए–सिफ्फीन में शहीद किया गया।

24. मुस्तदरक हाकिम की जिल्द 3, पेज 140 पर है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ दूसरे सहाब–ए–किराम रिज्वानुल्लाहे अलैहिम अजमईन नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सफर में थे तो आपने इरशाद फ़रमाया, क्या मैं बता दूँ सबसे बदबख़्त दो इंसान कौन हैं, तो सबने कहा– हाँ। ऐ अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक कौम–ए–समूद का वह सुर्ख रंग वाला बदबख़्त जिसने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी को क़त्ल किया और दूसरा ऐ अली! वह बदबख़्त जो तुम्हारे यहाँ तलवार मारेगा (आपने गर्दन की तरफ इशारा फ़रमा कर कहा)। यह ग़ैब की ख़बर भी, 17 रमज़ानुल मुबारक, 40 हिज़री को सही साबित हुई। जब अब्दुल रहमान बिन मुलज़िम नामी बदबख़्त खारेजी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की गर्दन पर क़ातेलाना हमला किया, जिससे आप शहीद हो गए।

25. अबू दाऊद शरीफ की जिल्द 2, पेज 231 पर यह हदीष–ए–पाक है कि हज़रत हुज़ैफ़ा इब्न–ए–यमान सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम! मैं नहीं जानता कि मेरे साथी भूल गए हैं या जान–बूझ कर अनजान बन रहे हैं। ख़ुदा की क़सम दुनिया के ख़त्म होने तक जितने फ़ित्ना फैलाने वाले हैं, जिनकी तादाद तीन सौ या इससे ज़्यादा है, उन सबके नाम उनके बाप दादा और उनके ख़ानदान के नाम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम लोगों को बता दिया है।

अइम्म–ए–किराम का अक़ीद–ए–इल्म–ए–ग़ैब

हज़रत शैख़ शरफुद्दीन बूसीरी रहमतुल्लाह अलैह अपने कसीदे में फ़रमाते हैं–

وَسِعَ العَالَمِيْنَ عِلْماً وَ حِكْماً

तर्जमा : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, आपका इल्म पूरी दुनिया को घेरे हुए है (यानी आपको पूरी दुनिया का इल्म है) (कसीदा बुर्दा शरीफ पेज 18)

इमाम इब्न–ए–हजर मक्की अलैहिर्रहमह, इसी क़सीदे की शरह, शरह–ए–उम्मुल कुरा में फ़रमाते हैं कि बेशक, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तमाम दुनया का इल्म अ़ता फ़रमाया, तो साबित हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब अगले–पिछले लोगों और मा काना व मा यकून यानी हर चीज़ का इल्म आपको हो गया।

हज़रत मौलाना (मुल्ला) अली कारी क़सीदा बुर्दा शरीफ की शरह ज़ुब्दह में फ़रमाते हैं कि लौह व कलम का इल्म उलूम–ए–मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म के सतरों में से एक सतर (पंक्ति) है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न होते तो यह सब कुछ ना होता, ना लौह होता, ना कलम, ना उनके उलूम (अल ज़ुब्दह, पेज 117)

इसी अक़ीदे को अल्लामा इक़बाल ने भी अपने शेर में ब्यान किया है, कहते हैं–

लौह भी तू, कलम भी तू, तेरा वजूद अल किताब
गुंबद–ए–आबगीना रंग, तेरे वजूद में हुबाब।

अज़ीम मोहद्दिष हज़रत हाफ़िज़ इब्न–ए–हजर अस्क़लानी शरह–ए–मोहज्ज़ब में फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर क़ेयामत तक की तमाम मख़्लूकात हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश की गई, जिनको आप ने पहचान लिया। जिस तरह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पेश की गई थीं (नसीमुर्रियाज़, 2/208, तीसरा बाब)

इमाम इब्न–ए–हजर मक्की रह्मतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं– अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर चाहें तो एक वक़्त में सत्तर हज़ार जगह तशरीफ़ ले जा सकते हैं (अल फतावा अल कुबरा लेइब्निल हजर 2/9)।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अलैहि इरशाद फ़रमाते हैं, नुबुव्वत का मतलब ही इल्म–ए–ग़ैब पर बा ख़बर होना है (अल मवाहिब अल लदुन्नियह 2/47)।

इमाम इब्नुल हाज मक्की फ़रमाते हैं कि बेशक हमारे

उलमा–ए–किराम ने फ़रमाया है कि दुनयावी और इस वक़्त की हालत में इस बात में कुछ फ़र्क नहीं है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत को देख रहे हैं। उनकी हर हालत उनके दिलों के हर इरादे को पहचानते हैं और यह सब चीज़ें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे जानते हैं कि उनसे कुछ छुपा नहीं है (अल मद्खल ले इब्न–ए– अल्हाज 1/252)।

अल्लामा अब्दुल रऊफ मनावी फ़रमाते हैं कि पाकीज़ा जानैं जब बदन के अलाकों से जुदा होकर आलम–ए–बाला से मिलती हैं (यानी वफात के बाद) तो उनके लिए कोई परदा नहीं रहता, वह हर चीज़ को ऐसे देखती और सुनती हैं जैसे उनके पास हाज़िर हैं (अल तैसीर शरह अल्जामे–उ–रसगीर 1/502)।

हज़रत शैख़ मोहद्दिष दहलवी अलैहिर्रह्म फ़रमाते हैं कि उनको याद करो। उन पर दुरूद शरीफ पढ़ो और ज़िक्र–ए–मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वक़्त ऐसे हो जाओ जैसे कि तुम उनके सामने हाज़िर हो और तुम उनको देख रहे हो, पूरे अदब और ताज़ीम से रहो। हैबत भी हो और उम्मीद भी और जान लो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें देख रहे हैं और तुम्हारी बात सुन रहे हैं क्योंकि वह सिफ़ात–ए–इलाहिया से मुत्तसिफ हैं और अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की एक सिफ़त यह भी है कि जो मुझे याद करता है, मैं उसके पास होता हूँ (मदारिजुन नुबुव्वत, ग्यारहवाँ बाब 2/261)।

और इसी किताब में आपने यह भी फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो कुछ दुनिया में है, आदम अलैहिस्सलाम से लेकर सूर फूंके जाने तक, सब आप पर ज़ाहिर

कर दिया गया। आपने उनमें से कुछ के बारे में अपने सहाबा को ख़बर दिया (मदारिजुन नुबूव्वत पाँचवाँ बाब 1/144)।

शाह वलीउल्लाह मोहद्दिष दहलवी अलैहिर्रहमह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर–ए–अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह–ए–नाज़ से मुझको इस हालत का इल्म हुआ कि बन्दा अपने मक़ाम से मक़ाम–ए–कुद्स तक किस तरह तरक़्क़ी करता है कि उस पर हर चीज़ रौशन हो जाती है, जिस तरह हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इस मक़ाम के बारे में मेराज के वाक़ए में ख़बर दी (फ़ुयूज़ुल हरमैन 169)।

अल मवाहिब अल लदुन्नियह 2/45/46 पर है कि हुज़ूरे पाक को नबी इसलिए कहा जाता है कि अल्लाह पाक ने आपको इल्म–ए–ग़ैब अ़ता किया।

लोग़त (डिक्शनरी) में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मतबल और माना

लुगत की मशहूर किताब मिसबाहुल लुग़ात जिसे देवबंदी ज़माअत के आलिम मोलवी अब्दुल हफीज बलियावी ने लिखी है, उसके पेज नंबर 846 पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का माना लिखा गया है। अल्लाह के इल्हाम (बताने) से ग़ैब की बात बताने वाला, आइन्दा (भविष्य) की पेशीन गोई करने वाला।

मेरे मुसलमान भाइयों! खूब समझ लो कि जिसने अल्लाह पाक और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी की, उसका सब कुछ किया धरा बेकार है, उसकी कोई इबादत कुबूल नहीं होगी। जब अल्लाह पाक खुद फ़रमाता है कि

हमने अपने पसंदीदा रसूल को इल्म–ए–ग़ैब दिया है तो भला वह कौन सा मुसलमान है जो कहता है कि रसूल को इल्म–ए–ग़ैब नहीं। यक़ीनन उसका नाम सिर्फ़ मुसलमान है मगर वह मुसलमान नहीं, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त सूरहः अल फ़तह की आयत नम्बर 8 ता 9 में फ़रमाता है–

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شٰهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ﴿٩﴾

तर्जमा : ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने आपको भेजा, गवाह और खुश–खबरी सुनाता, डर सुनाता, ताकि ऐ ईमान वालों, तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल–ए–पाक की इज्ज़त और ताज़ीम करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी ब्यान करो।

कुरान की इस आयत को ग़ौर से पढ़ें, अल्लाह पाक ने इस्लाम भेजने और कुरान उतारने का तीन मकसद बताया–

1. पहला यह कि अल्लाह पाक व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाओ।
2. ईमान लाने के बाद पहला काम यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम और इज्ज़त करो।
3. फिर तीसरे नम्बर पर फ़रमाया कि इबादत करो।

आयत की इस तरतीब से मालूम हुआ कि ईमान लाने के बाद सबसे अहम् काम नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम व तौक़ीर (इज्ज़त) करना है। अब अगर कोई नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ताज़ीम के साथ इबादत करता है

तो उसकी इबादत मकबूल है, वरना नहीं। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ऐसे ही लोगों के बारे में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करते हैं और अपने आप को मुसलमान भी कहते है। सूरह अल्फुरकान की आयत नम्बर 23 में फ़रमाता है :

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا

तर्जमा : जो कुछ उन्होंने अमल (नेक काम/इबादत) किए थे हमने सब बर्बाद कर दिए। देखिए! अल्लाह पाक ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वाले को काफिर कहा और फ़रमाया कि तुम ईमान लाने के बाद भी काफिर हो गए।

हज़रत इब्न–ए–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक पेड़ के नीचे आराम फ़रमा रहे थे। वहाँ आप ने फ़रमाया कि अभी तुम्हारे पास एक शैतान की आँख वाला आदमी आयेगा, तुम उससे बात भी न करना अभी कुछ देर न गुज़री थी कि एक करन्जी आँख वाला आदमी आया, रसूल–ए–करीम अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम ने उसे बुलाकर फ़रमाया कि तुम और तुम्हारे दोस्त मेरी शान में क्या गुस्ताख़ी की बात कर रहे थे। वह आदमी अपने दोस्तों को बुलाकर लाया और सबने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि हम तो बस ऐसे ही खेल मज़ाक कर रहे थे (इब्न–ए–ज़रीर तबरी)।

इस वाक़ए को अल्लाह पाक ने कुरान–ए–पाक की सूरह तौबा आयत 65, पारा 10 में फ़रमा दिया कि वह लाख अल्लाह की क़सम खाएँ मगर उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ी की बात की है। इसलिए ईमान लाने के बाद भी काफिर हो गए। इसी को कुरान–ए–पाक में यूँ कहा गया–

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ

كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

अब आप अंदाज़ा लगाएँ कि जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान को कम करने और उनका मक़ाम घटाने की कोशिश करते हैं, क्या वह मुसलमान रह जाएंगे? हरगिज़ नहीं, उनकी तो सारी इबादत बेकार है, उनके मुँह पर मार दी जाएगी।

अब आइये बद अक़ीदा ज़माअत की कुछ गुस्ताख़ियाँ देखिए और फ़ैसला कीजिए कि हक़ पर कौन है?

बद अक़ीदा ज़माअत की गुस्ताख़ियां

वहाबी मसलक के बानी शैख़ नज्दी ने किताबुल तौहीद में लिखा कि जिसने यह अक़ीदा रखा कि जब वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लेता है तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसकी ख़बर हो जाती है। वह मुशरिक हो गया। चाहे यह अक़ीदा रखे कि उनको सुनने की ताक़त खुद से हासिल है या अल्लाह की अ़ता से, हर तरह से मुशरिक हो जाता है।

इसी किताब में लिखता है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़िन्दगी के ख़ातिमे का हाल नहीं जानते थे तो बाद–ए–वफात उन मुशरेकीन का हाल कैसे जानेंगे। (नऊजु बिल्लाह)

मौलवी इस्माइल देहलवी जिसने अंग्रेज़ के कहने पर ''तक्वियतुल ईमान'' लिखकर मुसलमानों में इख्तेलाफ का बीज़ बोया, जिसके नतीज़े में वहाबी देवबंदी जमाअत (संगठन) वजूद (अस्तित्व) में आया। यह वही किताब है जिसके बारे में देवबंदी मज़हब के ही बड़े मौलवी अनवर शाह कश्मीरी ने कहा कि इसी किताब ''तक्वियतुल ईमान'' की वज़ह से मुसलमानों में बहुत झगड़े हुए। जमाअत–ए–अहले सुन्नत दो धड़ों में बँट गई। (मल्फ़ूज़ाते मुहद्दिष कश्मीरी पेज 205)

1. मौलवी इस्माइल दहलवी ने जहाँ अपनी किताब में दीगर कई गुस्ताख़ियाँ की हैं, वहीं उसने यह भी कहा है कि ''क्योंकि ग़ैब की बात अल्लाह ही जानता है, रसूल को क्या ख़बर ''तक्वियतुल इमान, पेज 130''। इसमें वहाबियों के इमाम मौलवी इस्माइल दहलवी ने तमाम रसूलों से ग़ैब की ख़बर का इनकार किया है जिससे यह पता चला कि इस्माइल, अंबिया अलैहिमुस्सलाम के लिए अख़बार–ए–इल्म–ए–ग़ैब, अम्बा–ए–इल्म–ए–ग़ैब का अक़ीदा भी न रखते थे।
2. मौलवी रशीद अहमद गंगोही, जिनको देवबंदी ग़ौष–ए–आज़म के नाम से याद करते हैं, ने अपनी किताब ''मसला दर इल्म–ए–ग़ैबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पेज 154'' पर लिखा है कि ''पस इसमें हर चहार–ए–मज़ाहिब व जुमला उलमा मुत्तफ़िक (सहमत) हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ग़ैब पर मुत्तला (सूचित) नहीं होते''।

   गंगोही साहब की इस बात का मतलब बिल्कुल साफ़ है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ग़ैब पर मुत्तला (सूचित) नहीं होते। (मआज़ल्लाह) जिससे पता चला कि गंगोही साहब अंबिया के लिए इत्तेला अलल ग़ैब (ग़ैब की ख़बर) नहीं मानते और अजीब व ग़रीब बात यह है कि इस पर अपनी तरफ से उलमा की आम सहमति भी बताते हैं।
3. देवबंदी मज़हब में ''इमाम'' का दर्जा रखने वाले मशहूर देवबंदी मौलवी सरफ़राज़ सफ़दर ने अपनी किताब ''तन्कीद–ए–मतीन, पेज 163'' पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अ़ताई इल्म–ए–ग़ैब (अल्लाह के ज़रिया दिया गया इल्म–ए–ग़ैब) की मुख़ालफत करते हुए लिखा है कि ''गर्ज़ कि ला आलमुल ग़ैब (अल आयह) से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इल्म–ए–ग़ैब की नफी (ना होना) क़तअन (बिलकुल) और यक़ीनन साबित है और इस आयत

में नफी इल्म–ए–ग़ैब पर सनद लाना मंसूस व बा महल है और इल्म–ए–गै़ब अ़ताई ही की नफी मुराद, मोतअय्यन है। इसमें रत्ती बराबर शक व शुब्हा नहीं''। (मआज़ल्लाह)

दिल के फफोले जल उठे, सीने के दाग़ से।
इस घर को आग लग गयी, घर के चिराग़ से।।

देवबंदी मज़हब में निहायत ही आला मुकाम रखने वाले मोल्वी जिनको देवबंदी हकीमुल उम्मत कहते हैं यानी मौलवी अशरफ अली थानवी साहब अपने रिसाल–ए– हिफजुल ईमान के पेज नंबर 13 पर गुस्ताख़ी की तमाम हदों को पार करते हुए लिखते हैं कि–

''फिर यह कि आपकी ज़ात मुक़द्दसा पर इल्म–ए–ग़ैब का हुक्म किया जाना अगर बक़ौल ज़ैद सही हो तो दरयाफ्त तलब अम्र यह है कि इस ग़ैब से मुराद ब अज़ ग़ैब है या कुल ग़ैब, अगर ब अज़ उलूम–ए–ग़ैबिया मुराद हैं तो इसमें हुजूर ही की क्या तख़्सीस है, ऐसा इल्म–ए–ग़ैब तो ज़ैद व उमर बल्कि हर सबी (बच्चा) व मजनून (पागल) बल्कि ज़मीअ–ए–हैवानात (तमाम जानवरों) व बहाइम के लिए भी हासिल है''। (मोआज़ल्लाह)

अब यह तो थानवी के दीवाने ही बता सकते हैं कि थानवी साहब उन जानवरों के लिए निजी इल्म–ए–ग़ैब मानते हैं या अ़ताई (अनुदानित)? क्योंकि अगर निजी मानते हैं तो उसका कुफ़्र होना बिलकुल खुला हुआ है और अगर अ़ताई (अल्लाह के अ़ता करने से) मानते हैं तो भी जान नहीं छूटती क्योंकि उन्हीं की जमाअत के मौलवियों ने अ़ताई इल्म–ए–ग़ैब का भी इनकार किया है। इस तरह यह ज़नाब दोनो तरफ से काफ़िर व मुर्तद होते हैं। थानवी जी के लिए यह वह हड्‌डी है जिसे ना उगलते बात बनती है, ना निगलते बात बनती है। यह है नतीजा नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुस्ताख़ी का। यक़ीनन जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुस्ताख़ी करता है, उस पर दुनिया तंग हो जाती है। इसकी वाज़ेह (साफ़) मिषाल आपके सामने है कि थानवी साहब का

मुसलमान होना खुद देवबंदी अक़ीदे को ख़िलाफ है।

मौलवी रशीद अहमद गंगोहवी ने अपनी गुस्ताखाना किताब, अल बराहीनुल कातिआ के पेज नंबर 51 पर लिखा है कि शैतान और मलकुल मौत का हाल देखकर इल्म–ए–मुहीत–ए–ज़मीन (पूरी ज़मीन का इल्म) का फ़खरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़िलाफ–ए–नुसूस–ए–कतईया (कुरान व हदीष के ख़िलाफ़) के बिला दलील–ए–महज़, क्यास–ए–फासिदा से साबित करना शिर्क नही तो कौन सा ईमान का हिस्सा है। शैतान व मलकुल मौत को यह उसअत, नस्स से साबित हुई। फ़खरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उसअत–ए–इल्म (बहुत ज़्यादा इल्म) की कौन सी नस्स–ए–क़तई है।

मुसलमान भाइओं! आप देखें कि किस तरह इन बद अक़ीदा मुल्लावों ने अल्लाह पाक के फ़रमान का खुला इनकार किया है। एक तरफ तो खुद अल्लाह रब्बुल इज्ज़त फ़रमाता है कि मैं अपने जिस रसूल को चाहूँ, ग़ैब का इल्म अ़ता करता हूँ और दूसरी तरफ यह कठमुल्ला कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिलकुल ही इल्म–ए–ग़ैब नहीं है और मौलवी अशरफ अली थानवी ने तो गुस्ताख़ी की हद ही पार कर दी कि : नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म को जानवरों, पागलों से तश्बीह (मिसाल) दे दी जो यक़ीनन रसूल–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में बहुत बड़ी गुस्ताख़ी है। यही वजह है कि उस समय के उलमा–ए–अरब व अजम (जिनकी तादाद 268 से भी अधिक है) ने मौलवी अशरफ अली थानवी और उसका अकीदा मानने वालों की तकफ़ीर की और उसे मुर्तद और काफ़िर कहा।

और मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने तो शैतान से अपनी दोस्ती का सुबूत ही पेश कर दिया कि शैतान के लिए तो बहुत ज़्यादा बल्कि पूरी ज़मीन का इल्म बिला झिझक मान लेता है, मगर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इल्म–ए–ग़ैब

मानने में उसको कोई दलील ही नहीं मिलती। सच है जिसको जिससे प्यार होता है, उसी के गुण गाता है। इस बद अक़ीदा मुल्ला को शैतान से प्यार है तो उसके लिए तो इल्म मानता है, मगर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत ही नहीं तो उनके लिए इल्म–ए–ग़ैब क्यों माने। हमें अफ़सोस होता है कि क्या उनको वह आयतें नज़र नहीं आतीं जो हमने ऊपर ज़िक्र किया? आती हैं मगर सच कहा है किसी ने **'खुदा जब दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है'**।

मगर हम तो अहले सुल्लत व ज़माअत हैं यानी कुरान व हदीष, सहाब–ए–किराम के मानने वाले हैं। नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत करने वाले हैं। हम तो नबी–ए–पाक के लिए अल्लाह की अ़ता से इल्म–ए–ग़ैब का होना मानते हैं क्योंकि यही अल्लाह पाक का फ़रमान है और यह सिर्फ हम ही नहीं बल्कि बहुत से बद अक़ीदा ज़माअत के मौलबियों ने भी माना है। जैसा कि मौलवी मुर्तजा हुसैन देवबंदी ने अपनी किताब "तौजीहुल ब्यान फी हिफ्जुलईमान" के पेज 5 में तस्लीम किया है कि सरवर–ए–आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इल्म–ए–ग़ैब ब अ़ताए इलाही हासिल है।

इसी तरह पेज 13 पर यही मौलवी साहब लिखते हैं कि "साहिबे" हिफ्जुलईमान का मुद्दआ तो यह है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बावजूदे इल्म–ए–ग़ैब अ़ताई होने के आलिमुल ग़ैब कहना जायज़ नहीं।

इसी तरह देवबंदी मज़हब में बड़ा दर्जा रखने वाले देवबंदी मौलवी सरफ़राज़ खान सफ़दर ने अपनी किताब "ईज़ालतु रैब" के पेज 453 पर लिखा है कि "बाकी हज़रात फुकहा–ए–किराम में से जिनहोंने तकफीर नहीं की तो उनकी इबारत का मफाद भी सिर्फ यही है कि अगर कोई शख़्श ब अज़ इल्म–ए–ग़ैब का अक़ीदा रखता हो तो वह काफ़िर ना होगा"।

अल्हम्दुलिल्लाह! इसे कहते हैं कि हक़ बात वह जिसकी गवाही दुश्मन भी दे। मौलवी मुर्तज़ा हुसैन और मौलवी सरफ़राज़ खान सफ़दर की बात से साबित हो गया कि मौलवी अशरफ अली थानवी और खुद मौसूफ़ का अक़ीदा भी यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अ़ताई तौर पर इल्म–ए–ग़ैब जानते हैं, लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि इनकी गुस्ताख़ाना ज़बान की वजह से इनका मानना भी बेकार है। अल्लाह पाक ऐसे लोगों को हिदायत अ़ता फ़रमाये। आमीन।

देवबंदी उलमा के कलम से इल्म–ए–ग़ैब के इस्बात पर मज़ीद हवाले पेश किये जा सकते हैं, मगर क़स्दन तर्क कर रहा हूँ कि जिसको मानना है, उसके लिए इतना ही काफी है और जिसको नहीं मानना है उसके लिए सुबूतों का ढेर भी बे फाइदह है।

वहाबी मस्लक के इमाम, इब्न–ए–तैमिया

इब्न–ए–तैमिया ने अपने फतावा के पेज 54, जिल्द 20 पर कहा कि–

जब तक़वा से दिल आबाद होता है तो आदमी के लिए मोआमलात बिलकुल वाज़ेह और खुल जाते हैं। एक जगह लिखा है कि : **जब दिल में ईमान मज़बूत हो जाता है तो उसका कश्फ़ भी बढ़ जाता है और चीज़ें उसके लिए खुल जाती हैं। वह हक़ीक़तों को पा लेता है और जब ईमान कमज़ोर होता है तो दिल का कश्फ़ भी कमज़ोर हो जाता है।**

इसी किताब के पेज 47 पर लिखा गया है : **बहुत से अहले ईमान और अहले कश्फ़ के दिल में अल्लाह यह डालता है कि यह खाना हराम है, यह आदमी काफ़िर है, यह आदमी फसिक़ है, यह आदमी दय्यूस है, यह आदमी लूती है, यह आदमी शराबी है, यह**

आदमी गाने वाला है, यह आदमी झूठा है। इन बातों को बताने के लिए उसके पास कोई खुली दलील नहीं होती है, बल्कि अल्लाह के दिल में डालने से अल्लाह वाले इन बातों से बा ख़बर होते हैं।

नोट– आप इब्ने तैमिया की इन बातों को ग़ौर से पढ़ें, जब उसका अक़ीदा आम मोमिनों के बारे में यह है कि अगर वह तक़वा यानी अल्लाह पाक की इबादत से अपने दिल को साफ़ कर लें तो उनके लिए हर चीज़ वाज़ेह और ज़ाहिर हो जाती है, तो भला बताएँ कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा किसको तक़वा का मक़ाम हासिल हो सकता है। बल्कि उन्हीं के सदक़े में तो उम्मत को तक़वा का कुछ हिस्सा मिला है, जिसके अन्दर ज़र्रा बराबर भी ईमान का हिस्सा होगा, तो उसको हमारी बात ज़रूर समझ में आ जाएगी।

अलहम्दुलिल्लाह! अहले सुन्नत व जमाअत कुरान–ए–पाक व हदीष की रौशनी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए जो इल्म–ए–ग़ैब मानते हैं उसे ब अज़ ही जानते हैं। इसकी तफ़सील यह है कि अल्लाह तआ़ला के ला महदूद इल्म (असीमित ज्ञान) के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म की वह तुलना भी नहीं जो समुन्दर के एक क़तरे को समुन्दर से होती है, क्योंकि समुन्दर भी सीमित है और क़तरा भी, जबकि अल्लाह पाक का इल्म ला महदूद (असीमित) और हुज़ूर का इल्म हमदूद (सीमित)। लिहाज़ा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म–ए–ग़ैब अल्लाह के इल्म–ए–ग़ैब के मुकाबले में ब अज़ हुआ। जब हमने अल्लाह के बराबर इल्म ना माना तो शिर्क भी ना हुआ और सबसे बड़ी बात यह है कि अल्लाह पाक का इल्म–ए–पाक ज़ाती (खुद से) है जबकि हमारे नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म–ए–ग़ैब अल्लाह के बताने से है।

अब रही बात इस अक़ीदा की कि हमारे उलमा की किताबों में

हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कुल्ली इल्म–ए–ग़ैब के अलफ़ाज़ भी हैं तो इससे देवबंदी और वहाबी हज़रात को धोखे में नहीं पड़ना चाहिए बल्कि इस इजमाल की तफ़सील को जानना चाहिए। तो अर्ज़ है कि मख़लूक के एतेबार से हमारा अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म अ़ता किया गया है। (जैसा कि मौलवी कासिम नानोतवी देवबंदी ने भी अपनी कितब "तह्ज़ीरुन्नास" में लिखा है) चूँकि कुल मख़लूक का इल्म (ज्ञान) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म के मुक़ाबले में ऐसा ही है जैसे समुद्र के मुक़ाबले में एक क़तरा। तो इस एतेबार से हुज़ूर–ए–अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म कुल्ली हुआ। यह भी जान लेना चाहिए कि हमने कभी भी हुज़ूर–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अल्लाह के बराबर इल्म–ए–कुल्ली का दावा नहीं किया। (तफसील के लिए देखिए मुजद्दिदे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमह का फ़तावा रजविया और दीग़र उलमा–ए–अहले सुन्नत की कितबें जैसे–जाअल हक़, तौज़ीहुल ब्यान, मुक़ामे विलायत व नुबुव्वत, मदारिजुन नुबुव्वत वगैरह)। इसलिए देवबंदी हज़रात को इससे धोखे में नहीं पड़ना चाहिए कि मआज़ल्ला जब हम सुन्नी हज़रात कुल्ली इल्म–ए–ग़ैब का इस्बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए करते हैं तो इससे मुराद ज़मीअ–ए–मालूमात–ए– इलाहिया होती है। ऐसा अक़ीदा हरगिज़ उलमा–ए–अहले सुन्नत का नहीं है।

अब देवबंदी और वहाबी मज़हब के मानने वालों से मेरा सवाल यह है कि अगर हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ब अज़ इल्म–ए–ग़ैब अ़ताई, गैर मुस्तक़िल का क़ौल करें (मानें) तो आप लोग हमें मुशरिक क़रार देते हैं, जबकि आपके मज़हब के निहायत ही मोतबर तरीन आलिम सरफ़राज़ ख़ान सफ़दर साहब ब अज़ इल्म–ए–ग़ैब के अक़ीदा को हक़ लिख रहे हैं और यह याद रहे कि देवबंदी हज़रात के नज़दीक अक़ाइद कतई ही होते हैं।

यानी इनका सुबूत दलील–ए–कतई (नस्से कतई, ख़बर–ए–मुतवातिर या इज्माए कतई से होता है) (हवाला– तन्कीदे मतीन, एजालातुर्रैब वग़ैरह) मुख़्तसर कलाम यह है कि देवबंदी हज़रात का यह अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ब अज़ इल्म–ए–ग़ैब अ़ता किया गया है और यह बात दलील–ए–क़तई से साबित है और जब दलील क़तई का इंकार करने वाला काफ़िर होता है तो ब अज़ इल्म–ए–ग़ैब का इंकार करने वाला भी काफ़िर हुआ।

इसलिए ऐसे हज़रात से गुज़ारिश है कि जब आपके मज़हब के उलमा भी इल्म–ए–ग़ैब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मान रहे हैं तो उम्मत का ख़ैर ख़्वाही के लिए कुफ़्र व शिर्क़ की मशीन चलाकर मुसलमानों पर कुफ़्र की गोली चलाने से परहेज़ करें और अहले सुन्नत व जमाअ़त का सच्चा अ़क़ीदा तस्लीम कर लें।

दोस्तों! मेरा यह किताब लिखने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ इस तक़्फीरी मुहिम जो देवबंदी व वहाबी हज़रात की तरफ से हम अहले सुन्नत व ज़माअत के ख़िलाफ चलाई जा रही है, उनको आईना दिखाना है। यह लोग महज़ अपनी दुकानदारी चमकाने के लिए इल्म–ए–ग़ैब के अक़ीदे को जान–बूझ कर पेचीदा बनाने की कोशिश करते हैं, जबकि क़ुरान व हदीष में यह अक़ीदा बिलकुल साफ़–साफ़ वाज़ेह है।

रसूल–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह पाक की अ़ता से इल्म–ए–ग़ैब है और आप ग़ैब की ख़बर रखने वाले हैं।

चूँकि मैं अपने आपको उलूम–ए–इस्लामिया का एक छोटा सा तालिब–ए–इल्म समझता हूँ, इसलिए मुमकिन है कि मेरे लिखने में कोई ग़लती वाकेअ हुई हो तो उससे मैं अल्लाह पाक की बारगाह में इस्तिग़फार तलब करता हूँ और उसकी पनाह में आता हूँ और अपनी हर उस बात को मरदूद समझता हूँ जो क़ुरान व सुन्नत से टकराए।

अल्लाह पाक की बारगाहे आलीशान में दस्त बस्ता दुआ है कि ऐ मेहरबान मौला तू जानता है कि तेरे इस गुनाहग़ार बन्दे ने यह तहरीर इसलिए लिखी है कि तू और तेरे महबूब–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम राज़ी हो जाएँ, फिर सारी दुनिया नाराज़ हो जाए तो भी कुछ ग़म नहीं। मेरे पाक परवरदिग़ार, मेरे इस लिखने में तासीर पैदा फ़रमा, बद मज़हबों के लिए हक़ क़ुबूल करने के दरवाज़े खोल दे और सुन्नियों के लिए ईमान की मज़बूती का ज़रिआ बना और मुझ गुनाहग़ार के लिए बख़्शिश का ज़रिआ बना। आमीन या रब्बल आलमीन बे हुर्मते सय्यिदिल अबरारे वल मुरसलीन।

अपील

सीरत एजूकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट, नौतनवां महराजगंज एक सामाजिक और समाजसेवी ट्रस्ट है। जिसका मकसद क़ौम व मिल्लत में तालीमी और मज़हबी बेदारी पैदा करना और लोगों तक इस्लाम की सही तालीम पहुँचाना है।

आपसे गुज़ारिश है कि इस तंजीम का साथ देकर हमारी हौसला अफज़ाई फरमायें।

मोहम्मद शमीम अशरफी
अध्यक्ष,
सीरत एजूकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट, नौतनवां–महराजगंज
मो0 नं0 8009307035

फ़िहरिस्त